"जागो अणे जगाओ"

श्री चमन लाल सलूजा—कानपुर

जागो अणे जगाओ शलोगन है गुजराती भाषा का जिसका अर्थ है स्वयं जागो और दूसरों को जगाओ देखने को तो यह शलोगन बड़ा सरल सा लगता है परन्तु यदि इस पर गम्भीरता से विचार किया जाए तो पता चलेगा कि जिन्होंने यह 'नारा' समाज को दिया, उनका लक्ष्य क्या है ? विचार करना होगा कि देखें -कि हम जाग रहे हैं या कि वास्तव में हम सो रहे हैं। जागो अणे जगाओ का नारा समाज में उठाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? आइए इस पर विचार करके देखें।

आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो पता चलता है कि महामति स्वामी जी श्री प्राणनाथ जी से अपने समय में भारत वर्ष में जागनी की ज्वाला रोशन की और सोई हुई ब्रह्म सृष्टि को जागृत किया जिसके लिए उन्होंने लगभग तीन चौथाई भारत की यात्रा की। उनके नशावर शरीर छोड़ने के पश्चात् जागनी का कार्य हुआ अवश्य परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि अलग-अलग क्षेत्रों में अर्थात् जिस क्षेत्र में किसी ब्रह्म मुनि का प्रादुर्भाव हुआ, जागनी का कार्य उसी क्षेत्र तक ही सीमित रहा। राष्ट्रीय स्तर पर कोई प्रयास नहीं हुआ, फिर धीरे-धीरे क्षेत्रीय स्तर पर भी जागनी का कार्य मन्द पड़ता गया, बल्कि एक समय आ गया कि जागनी का कार्य शून्य हो गया। हालत यह हो गई कि यदि कोई हमारी युवा पीढ़ी से प्रणामी धर्म के विषय में पूछता, तो वह यही उत्तर देता कि मैंने एक प्रणामी परिवार में जन्म लिया है, इससे अधिक मुझे कुछ नहीं मालूम। युवा पीढ़ी को कोई धर्म की पहचान कराने वाला नहीं था। जिन लोगों के हाथ में समाज की बागडोर थी वह भी समाज को कोई प्रभावशाली दिशा न दे सके। हमारा अनमोल खजाना "श्री मुखवाणी" शृंगार और सिंहासन की शोभा बनकर रह गई। परिणाम यह निकला कि समाज का पढ़ा लिखा वर्ग धर्म से बेमुख हो गया और इधर-उधर भटकने लगा।

कुछ समय पूर्व समाज में एक बार फिर क्रान्ति का युग शुरू हुआ। उत्तर भारत के एक युवक के हृदय में जागनी दीप रोशन हुआ। उसने प्रण किया कि वह इस दीपक की रोशनी से सारे भारतवर्ष में प्रकाश फैलाएगा। उसे अपने सतगुरु का आशीर्वाद प्राप्त था। धनी का आश्रय लेकर श्री राज जी की वाणी का बिगुल बजा दिया। समाज जो गहरी नींद में सो रहा था, उसको सचेत किया-कहा– सुन्दर साथ जी, जागो–अपनें आपको पहचानो– तुम्हारे पास अनमोल खज़ाना श्री राज जी की वाणी है जिससे तुमने सच झूठ की पहचान करवा कर

Nijanand App

अखण्ड मुक्ति प्रदान करनी है। उस युवक ने सुन्दर साथ को वाणी के गुप्त भेद समझाये। साथ जागने लगा। उसे निज घर की पहचान होने लगी। पूरे उत्तर भारत में जागनी की एक लहर चल निकली। नगर-नगर, शहर-शहर खुले मंचों पर वाणी की गरजना होन लगा। सुनने वालों का समूह उमड़ता चला गया। उस युवक के कदम आगे बढ़ते गए। सोई हुई आत्मायें जो इधर-उधर भटक रही थी, उनको तारतम सुना कर निज घर की पहचान कराई। अर्थात् जागनी का कार्य बड़े जोरों से चलने लगा।

उत्तर भारत का यह तेजस्वी वीर फिर एक दिन गुजरात पहुँच गया। गुजरात प्रदेश में प्रणामी सुन्दर साथ की संख्या बहुत है। जगह-जगह पर प्रणामी धर्म के मुख्य तीर्थ स्थल हैं। गुजरात पहुँचकर उस वीर ने जागनी का कार्य जो कि मन्द गति से चल रहा था, को गति प्रदान की। सुन्दर साथ को वाणी के मरम समझाए वैसे तो गुजरात का सुन्दर साथ धर्म के प्रति पुष्ट है, हो भी क्यों न क्योंकि यह वही पावन धरती है जहाँ पर मेरे धनी का प्रादुर्भाव हुआ। काफी समय तक जागनी का कार्य हुआ।

जागनी अभियान शिविर 'ओड' तहसील आनन्द की यात्रा के सिलसिले में मुझे भी गुजरात साथ के दर्शन करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। ओड, टीम्बा, खम्बात, जामनगर, बलसाड, गणदेवी, सूरत तथा बड़ोदा आदि नगरों में अनेक सुन्दर साथ के दर्शन हुए। मैंने अनुभव किया कि 'पिया' के चरण छूकर गुजरात की धरती पावन हो गई है। वहाँ की मिट्टी से त्याग एवं तपस्या की भीनी-भीनी खुशबू आती है। पवन चलती है तो संगीत की मधुर स्वरों में वाणी की तरंगें सुनाई देती है। सुन्दर साथ के दर्शन करो तो उनके चेहरों पर सादगी प्यार और सेवा झलकती है। क्या छोटा क्या बड़ा, क्या अमीर, क्या गरीब, क्या युवा, क्या वृद्ध, क्या पुरुष क्या महिलायें, आने वाले सुन्दर साथ की राह में आँखें बिछाये खड़े हैं। दौड़-दौड़ सुन्दर साथ की सेवा करते हैं न वह थकते हैं और न ही उनको कोई संकोच बल्कि सदा उनके चेहरों पर मुसकराहट झलकती है और मुख से वाणी गायन होती है। कहने का मतलब गुजरात का सुन्दर साथ हर आने वाले सुन्दर साथ का पलकें बिछा कर स्वागत करता है।

गुजरात में जागनी का बिगुल कुछ इस प्रकार से बजा कि नगर-नगर, गाँव-गाँव शहर-शहर में खुले मंचों पर श्री राज जी की वाणी का प्रचार प्रसार होने लगा और फिर इसने जागनी शिविरों का रूप ले लिया। आठ दिन से लेकर २१ दिन तक के शिविर आयोजन किए जाने लगे। जागनी का कार्य होने लगा। इस कड़ी में चौथा जागनी अभियान शिविर ओड (तहसील आनन्द) गुजरात में दिनांक २१-१०-८७ से १७-११-८७ तक लगाया गया। इस शिविर में उत्तर भारत के भी सुन्दर साथ ने भाग लिया।

गुजरात में यह जागनी का कार्य देखकर दज्जाल कांपने लगा। ओड में जागनी शिविर

Nijanand App

लगने से हमारी समाज के एक पत्रकार जो कि मेरे बहुत प्रिय मित्र हैं, ने कहा था कि हम ओड में यह शिविर नहीं लगने देंगे चाहे इसके लिए हमें न्यायालय को शरण हो क्यों न लेनी पड़े। अब उन्होंने देखा होगा कि ओड में जागनी अभियान शिविर बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। मैं उन से क्षमा चाहूँगा कि मुझे उनके लिए ऐसा लिखना पड़ रहा है कि मनुष्य को कभी इतना अभिमान नहीं करना चाहिए। यह तो धनी के कार्य हैं, जिसे धनी स्वयं करते हैं। अभिमान का सर हमेशा नीचा होता है।

गुजरात के जागनी अभियान शिविरों का परिणाम यह निकला कि वहाँ के सुन्दर साथ में कुछ ऐसे करमठ नेता (सेवादार) सामने आये जो धर्म की राह पर सेवा के लिए एक टांग पर खड़े हैं। धर्म का जब भी कोई कार्य होता है, वह हर समय तैयार रहते हैं। सेवा कार्य के समय न तो उनको अपने परिवार की चिन्ता होती है, न ही कारोबार की फिकर बस एक ही लक्ष्य उनके सामने धनी की राह पर चलकर धर्म कार्य करना चूंकि मुझे सबके नाम मालूम नहीं हैं, इसीलिए यहाँ मैं नाम नहीं लिख रहा हूँ।

जागनी अभियान शिविर ओड में इस बार यह विचार हुआ कि इस जागनी अभियान शिविरों की सारे भारतवर्ष को आवश्यकता है क्योंकि इससे एक तो जागनी का कार्य सरल हो जाएगा, दूसरे हमारे समाज की युवा पीढ़ी इनसे लाभान्वित हो सकेगी। सही दिशा न मिलने के कारण हमारे समाज का जो वर्ग इधर-उधर भटक गया है, उसे सही मार्ग मिल सकेगा। ऐसे शिविरों में भाग लेने से सुन्दर साथ में प्रेम तथा सेवा के भाव उजागर होंगे। अतः जागनी अभियान शिविर को अखिल भारतीय रूप देने का निर्णय लिया गया और इस कार्य के लिए श्री रमन भाई पटेल, अहमदाबाद को सर्व सम्मति से एडहाक प्रधान चुना गया और उनको अधिकार दिया गया कि वह अगले जागनी अभियान शिविर तक एक कमेटी का चुनाव कर लें।

श्री रमन भाई पटेल, अहमदाबाद एक युवा हैं और उनमें इस पद को संभालने की पूरी कार्य कुशलता है। धर्म कार्यों में उनकी रुचि बहुत है। श्री पद्मावती पुरी धाम पन्ना के भी वह ट्रस्टी हैं। जो उनसे परिचित हैं, उन्होंने परना जो में उनकी कार्य कुशलता देखी होगी, उनमें लगन है, वह धर्म की सेवा करने के इच्छुक हैं। श्री राज जी महाराज से प्रार्थना है कि वे इस युवक को आशीर्वाद प्रदान करें ताकि इनके मन में पूरे समाज में चेतना लाने की जो कामना है, उसे पूरा कर सकें तथा पद की गरिमा की कसौटी पर खरे उतर सकें।

धाम दर्शन के नवम्बर ८६ एवं दिसम्बर ८७ के अंक से सुन्दर साथ को पता चल गया होगा कि अगला जागनी अभियान शिविर १ फरवरी १९८८ से ७ फरवरी १९८८ तक उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में होने जा रहा है। अतः उत्तर भारत के सुन्दर साथ से मेरी प्रार्थना है विशेष रूप से युवा वर्ग से उनके लिए यह सुनहरा मौका है, जो प्रश्न हमेशा

Nijanand App

उनके दिमांग के धर्म की पहचान के विषय में प्रश्न चिन्ह बने रहते हैं, उनका निर्वाण होगा, इस जागनी अभियान शिविर में भाग लेने पर हालांकि आज के भौतिकवाद के युग में कुछ लोगों को धर्म की बात बड़ी अजीब सी लगती है, परन्तु याद रखें कि भौतिकवाद की चमक दमक थोड़ी देर का छलावा है जिसके परिणाम बड़े भयंकर निकलते हैं। आज से ५० वर्ष पूर्व जो देश भौतिकवाद के शिखर पर थे, आज वे आत्मा की शान्ति के लिए भटक रहे हैं और सही रास्ते की तलाश में हैं।

इसलिए मेरी सुन्दर साथ से प्रार्थना है कि इस जागनी अभियान शिविर में भाग लेकर अपनी शंकाओं का समाधान करें।

अन्त में सुन्दर साथ से पुनः अनुरोध है कि जागनी का बिगुल बज चुका है। आपको भी जागना है समय बहुत कम है, स्वामी जी नें वाणी में कहा भी है–

सूता होये सो जागिए, जाग्या सो बैठा होय।
बैठा ठाड़ा होइयो, ठाड़ा पांव भरे अणे सोय॥

इसलिए जागिए और १-२-८८ से ७-२-८८ तक लगने वाले लखनऊ के जागनी अभियान शिविर में भाग लेकर अपनी आत्मा को जगाइए।

अतः जागो अणे जगाओ– प्रणाम !

नव वर्ष बधाई

समस्त सुन्दर साथ को नव वर्ष सुखदाई एवं मंगल मय हो। आइए हम सब मिल कर राष्ट्रीय एकता, समाज सेवा, मानव भाई चारे के कर्त्तव्यों का पालन करते हुये श्री राज जी की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लें।

"धाम दर्शन परिवार"

Nijanand App